UP Board Notes Class 7 Sanskrit chapter 13 यक्षयुधिष्ठिर-संवादः

शब्दार्थाः- किंस्वित् = कौन, खात् = आकाश से, बहुतरम् = अपेक्षाकृत अधिक, प्रवसतः = पर देश में रहने वाले का, आतुरस्य = रोगी का, दुर्जयः = कठिनाई से जीतने योग्य, पुंसाम् = मनुष्यों का, अनन्तकः = कभी अन्त न होने वाला, सर्वभूतहितः = सभी प्राणियों का हित करने वाला।

किंस्विद्गुरुतरं ..... तृणात् ॥1॥

हिन्दी अनुवाद – पृथ्वी पर गुरु से बड़ा कौन है? आसमान से ऊँचा कौन है? वायु से ज्यादा तेज कौन है? ईंधन से ज्यादा जलाने वाला कौन है?

माता गुरुतरा ..... तृणात् ॥2॥

हिन्दी अनुवाद – भूमि पर माता गुरु से बड़ी है। आसमान से ऊँचा पिता है। वायु से ज्यादा तीव्र मन है। चिन्ता ईंधन से ज्यादा जलाने वाली है।

किंस्वित् प्रवसतो ..... मरिष्यतः ॥3॥

हिन्दी अनुवाद – परदेश में मित्र कौन है? घर में मित्र कौन है? बीमार का मित्र कौन है? मरने वाले का मित्र कौन है?

सार्थः प्रवसतो ..... मरिष्यतः ॥4॥

हिन्दी अनुवाद – परदेस में मित्र धन है। घर में मित्र पत्नी है। बीमार का मित्र वैद्य है। मरने वाले का मित्र दान है।

कः शत्रुर्दुर्जयः ..... स्मृतः ॥5॥

हिन्दी अनुवाद – मनुष्य का अजेय शत्रु कौन है? और कभी न अन्त होने वाली व्याधि क्या है? किसको साधु (सज्जन) कहा जाता है? असाधु (दुर्जन) कौन माना जाता है?

क्रोधः सुदुर्जयः ..... स्मृतः ॥6॥

हिन्दी अनुवाद – मनुष्य का अजेय शत्रु क्रोध है। कभी न अन्त होने वाला रोग लोभ है। सब प्राणियों का हित करने वाला सज्जन होता है। निर्दय (दयाविहीन) को असाधु कहा जाता है।

कः पण्डितः ..... स्मृतः ॥7॥

हिन्दी अनुवाद – किस पुरुष को पंडित माना जाता है? नास्तिक किसको कहते हैं? मूर्ख कौन होता है, कामी किसको कहते हैं और कौन ईर्ष्यालु होता है?

धर्मज्ञः पण्डितो ..... स्मृतः ॥8॥

https://www.evidyarthi.in/

हिन्दी अनुवाद – धर्मज्ञ को पंडित जाना जाता है। नास्तिक मूर्ख को कहते हैं। संसार की इच्छा वाले को कामी कहते हैं और हृदय में जलन वाले को ईष्र्यालु कहते हैं।

https://www.evidyarthi.in/